मदन टेर (ऊँची ठौर)
श्रीजी की प्रथम लता मन्दिर

यह मन्दिर श्रीवृन्दावन-धाम का अति प्राचीन स्थल माना जाता है। श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय में यह स्थल श्रीहित हरिवंश महाप्रभुजी द्वारा ही प्रकट माना जाता है। श्रीवृन्दावन की पंचकोसी परिक्रमा मार्ग में यमुना तट पर वनविहार, रमणरेती वारह घाट के समीप ही मदन टेर है। यहीं पर वह विशाल वट-वृक्ष है जिसके नीचे सर्वप्रथम श्रीहिताचार्य महाप्रभु ने अपने आराध्य श्रीराधावल्लभजी को विराजमान किया था। यहीं श्रीहित महाप्रभु के दर्शनकर ब्रजवासी आपके दिव्य स्वरूप पर मुग्ध हो गये। यहीं (राजा) नरवाहनजी ने भी प्रथम दर्शन किया। समस्त भक्त ब्रजवासियों सहित नरवाहनजी ने प्रार्थना की कि आप धनुष से बाण चलायें, आपका बाण जिस जगह तक जायेगा वह सारा प्रदेश आपको भेंट है, श्रीहिताचार्य महाप्रभु ने बाण चलाया वह बाण 'तीर घाट' किंवा चीरघाट आज जिसे कहें (गोविन्दघाट) तक गया। फलत: मदनटेर से चीरघाट (गोविन्दघाट) रास- मण्डल तक की भूमि भेंट स्वरूप आई। ऐसी प्राचीन वाणियों में उल्लेख है।

भावुक विचारें इस पवित्र भूमि में जहाँ स्वयं श्रीहिताचार्य महाप्रभु श्रीराधावल्लभजी को लेकर विराजे थे, सेवार्थ इधर-उधर भ्रमण भी करते थे वही यह मदनटेर है, वही रज है, जहाँ उनके श्रीचरण भी डोले थे और वही वह वटवृक्ष है जिसकी शीतल छाँह में श्रीजी महाराज विराजे थे। श्रीसेवकजी ने उसी समय का अपनी वाणी में उल्लेख किया है कि-

"लता भवन सुख शीतल छँहा, श्रीहरिवंश रहत नित जहाँ।

तहाँ न वैभव आन की।" वास्तव में, ऐश्वर्य नाम की वस्तु का तो वहाँ प्रवेश ही नहीं था। आज तो इन ऐश्वर्य वस्तुओं की प्रधानता हो गई है एवं उनकी एकत्रिता बड़ी अभिन्न शीतल मानी जाती है। परन्तु सत्य क्या है ये तो भावुकजन स्वयं हृदय में समझ सकें। प्राणप्रभो प्रेम सेवा से रीझें या आधुनिक अर्थ चमक-दमक से। सत्य में बात क्या है वह प्रगट सिद्ध-स्थल आज अब अपने मध्य है, तभी हम उसका आनन्द नहीं ले रहे हैं। उसका पूर्ण उपयोग नहीं कर रहे हैं। ये सौभाग्य मानना चाहिये कि जहाँ स्वयं श्रीजी विराज श्रीहितजी महाराज जहाँ चले-फिर उस छोटे से दायरे वाले स्थान की सिद्धता से यह प्रतीति है फिर क्यों नहीं उसका आनन्द लेके क्षणिक जीवन को धन्य बनाने की चेष्टा की जाती है। संसार अपने दृष्टिकोण से ही सारी वस्तुओं को देखता है। इसमें हमें तर्क भी नहीं करना है बल्कि इसी तरह चलते हुए कहना है। समय के कुछ कारणों से जैसे अपना सिद्धि केलिस्थल वंशीवट अपने हाथों से निकल गया उनको लाने की चेष्टा न हो पाई। मदनटेर भी चला ही गया था, इसके लिए महाश्रेय प्रातःस्मरणीय पूज्य पितृचरण श्रीहित गोस्वामी रूपलालजी महाराज टीकैत को ही है, उन्हें प्रेरित करने का परम सन्त श्रीनवेलीशरण व प्रेमदासी को है।

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय इस महत कार्य को उनकी ऋणी है, यह अपने नाम यश को नहीं श्रीजी के नाम के लिये ही किया। इस स्थान में उन महानुभावों ने कितना श्रम, तन, मन, धन से किया जिन चक्षु ने देखा वही जानै अपने दृष्टिकोण से बताता हूँ इसी स्थान के किसी भाग में किसी सिद्धि के लिए चाहे ध्यान, भजन, परमार्थ कामना ठीक उसी प्रकार हल होती है जैसे महासिद्ध पुरुष कोई स्वयं मार्ग बता रहा है। अनुभूति की वार्ता है। भावुक हृदय ही समझ सकें। समय-समय पर स्थान ने उत्थान गाथायें भी देखी हैं। अनेक सन्तों ने यहाँ भजन, सत्संग, ध्यान प्रशादादि का आनन्द लिया दिया है; मनोहर इस स्थल के दर्शन कर आज भी हृदय में सहज भाव आये बिना नहीं रहे, श्रीजी में कृपा वरषती है। प्रवेश करते ही मन को शान्ती मिली ये स्थान की महत्ता है, मन चाहता है ये कृपा हम पर भी हो मयूरों का नृत्य, पक्षियों का कलरव, अन्न चुगना देखते बनता है। श्रीजी को पुष्प सेवा वर्षों करने का मदनटेर को गौरव रहा है। उन हाथों को धन्य है जिसने ये सेवा की, आज भी लगन से हो सके।

श्रीहित भजनलाल गोस्वामी
श्रीराधावल्लभ मन्दिर, वृन्दावन

''हित अलि प्यारी कुंवरि को, पुनि-पुनि चेत कराय।
मदन टेर की ओर चलि, काहे देर लगाय॥''

गो. श्रीकीर्तिलालजी कृत